

डॉ. डेविड बाउर, आगमनात्मक बाइबिल अध्ययन, व्याख्यान 11, खंड सर्वेक्षण, जेम्स 1 और जेम्स 1:5-8 पर विस्तृत टिप्पणियाँ

© 2024 डेविड बाउर और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. डेविड बाउर आगमनात्मक बाइबिल अध्ययन पर अपने शिक्षण में हैं। यह सत्र 11, खंड सर्वेक्षण, जेम्स 1, और जेम्स 1:5-8 पर विस्तृत अवलोकन है।

हम अब वास्तव में जेम्स के पहले अध्याय में सेगमेंट सर्वेक्षण के संबंध में जो कुछ कहा गया है उसे लागू करना चाहते हैं। दरअसल, जूड की पुस्तक का नमूना सर्वेक्षण लगभग एक खंड के सर्वेक्षण के उदाहरण के रूप में कार्य करता है क्योंकि जूड, निश्चित रूप से, केवल एक अध्याय लंबा है।

लेकिन हम आगे बढ़ना चाहते हैं और जेम्स के पहले अध्याय को देखना चाहते हैं। यह खंड थोड़ा अधिक जटिल है। यह उतना सीधा नहीं है जितना अधिकांश खंड हैं।

और इसलिए, इस खंड के सर्वेक्षण को स्पष्टीकरण के तरीके में बस थोड़ा और अधिक की आवश्यकता होगी। सतह पर, निःसंदेह, जेम्स के पहले अध्याय में जेम्स लगभग बेतरतीब ढंग से एक चीज़ से दूसरी चीज़ की ओर बढ़ता हुआ प्रतीत होता है। लेकिन वास्तव में, इस खंड को सावधानीपूर्वक पढ़ने से एक बहुत ही सावधानीपूर्वक और प्रभावी प्रकार की संरचना का पता चलता है।

अब, फिर से, हम पैराग्राफ शीर्षकों से शुरू करते हैं, जो हमें पाठ का सहारा लिए बिना खंड की सामग्री को याद करने में सहयोग के माध्यम से मदद करेगा। लेकिन, निश्चित रूप से, जैसा कि हमने उल्लेख किया है, खंड सर्वेक्षण के केंद्र में संरचनात्मक विश्लेषण है, जिसमें मुख्य इकाइयों और उप-इकाइयों की पहचान, रैखिक विकास, टूटना, और फिर समग्र रूप से खंड में संचालित प्रमुख संरचनात्मक संबंध शामिल हैं। अब, मैं यहां कुछ चीज़ें देखता हूँ।

एक बात के लिए, मैंने नोटिस किया कि पहला पैराग्राफ, जो श्लोक दो से चार तक होगा, और चौथा पैराग्राफ, जो श्लोक 12 से 15 तक होगा, परीक्षण और परीक्षण के बारे में बात करता है। तो यह बहुत अच्छी तरह से हो सकता है कि श्लोक दो से चार और श्लोक 12 से 15 के बीच कोई संबंध हो। मैंने यह भी देखा है कि श्लोक 16 में, धोखा का संदर्भ है।

वह 1:16 में कहता है, हे मेरे प्रिय भाइयों, धोखा न खाओ। 1:22 में, परन्तु वचन पर चलनेवाले बनो, और केवल सुननेवाले ही नहीं जो अपने आप को धोखा देते हैं। श्लोक 26 में, यदि कोई अपने आप को धार्मिक समझता है और अपनी जीभ पर लगाम नहीं लगाता, परन्तु अपने हृदय को धोखा देता है, तो उस व्यक्ति का धर्म व्यर्थ है।

और वास्तव में, श्लोक 19 में, वह कहता है, इसे जानो। इसलिए श्लोक 16 से 27 तक में धोखा न खाने पर बल दिया गया है, बल्कि इसके विपरीत, जानने या समझने पर जोर दिया गया है। तो, यह बहुत अच्छी तरह से हो सकता है कि छंद दो से 15 तक एक साथ हैं और करना ही होगा, वास्तव में एक साथ जुड़े हुए हैं, परीक्षण और परीक्षण और इसी तरह की धारणा से, और यह कि छंद 16 से 27 इसी की पुनरावृत्ति से एक साथ बंधे हैं धोखे से बचने और ज्ञान को अपनाने का विषय।

मैंने यह भी नोटिस किया है कि यदि, वास्तव में, छंद 15 और 16 के बीच कोई बदलाव हो सकता है, तो जेम्स 1 के पहले भाग का अंतिम पैराग्राफ, वह छंद 12 से 15 होगा, और जेम्स 1 के दूसरे भाग का पहला पैराग्राफ होगा।, जो छंद 16 से 18 तक होगा, इसमें शामिल है कि भगवान क्या देता है और क्या नहीं देता है। तो, हम छंद 12 से 15 में देखते हैं कि धन्य वह व्यक्ति है जो परीक्षण को सहन करता है, क्योंकि जब वह परीक्षण में खरा उतरता है, तो उसे जीवन का मुकुट मिलेगा जिसका वादा भगवान ने उनसे किया है जो उससे प्यार करते हैं। जब कोई परीक्षा में पड़े, तो यह न कहे, कि परमेश्वर की ओर से मेरी परीक्षा होती है, क्योंकि बुराई से परमेश्वर की परीक्षा नहीं होती, और वह आप ही किसी की परीक्षा नहीं करता।

परन्तु हर एक मनुष्य अपनी ही अभिलाषा से फंसकर परीक्षा में पड़ता है, फिर अभिलाषा जब गर्भवती हो जाती है तो पाप को जन्म देती है, और पाप जब बढ़ जाता है तो मृत्यु को जन्म देता है। वह आगे कहता है, धोखा मत खाओ, मेरे प्यारे भाइयों, हर अच्छा दान और हर उत्तम उपहार ऊपर से है, रोशनी के पिता से आता है, जिसके साथ परिवर्तन के कारण कोई भिन्नता या छाया नहीं होती है। उसने अपनी इच्छा से सत्य का वचन निकाला कि हम उसके प्राणियों में से एक प्रकार के पहले फल बनें।

तो, यह सब कहने के लिए, छंद 2 से 15 एक आम चिंता से बंधे हो सकते हैं, कम से कम शुरुआत और अंत में, कि किसी को परीक्षणों और प्रलोभनों से कैसे संबंधित होना चाहिए। छंद 16 से 27 धोखे से बचने और विपरीत ज्ञान के माध्यम से गले लगाने की एक सामान्य चिंता से एक साथ बंधे हो सकते हैं। और ये दो भाग, जेम्स 1 के ये दो हिस्से, वास्तव में एक साथ जुड़े हो सकते हैं, एक साथ जुड़े हुए हो सकते हैं जहाँ तक जेम्स 1 के पहले भाग का अंतिम अंश और जेम्स 1 के दूसरे भाग का पहला अंश या पहला पैराग्राफ होना चाहिए ईश्वर क्या नहीं देता और ईश्वर क्या देता है, इसके बीच अंतर के साथ।

वह देता नहीं; वह प्रलोभन के लिए ज़िम्मेदार नहीं है, बल्कि वह हर अच्छा और उत्तम उपहार देता है। तो, हम इसे इस तरह से चार्ट कर सकते हैं, और मुझे आपको चेतावनी देनी होगी कि यह एक तरह का व्यस्त चार्ट है, लेकिन हम यहां ध्यान दें कि यह वास्तव में इस दिशा में, इस तरह से आगे बढ़ता है, और वास्तव में इसके साथ शुरू होता है, जैसा कि मैं कहता हूं, श्लोक 2 से 4 तक, परीक्षणों में आनन्द मनाओ। संयोग से, यहाँ ग्रीक में शब्द पेरिस्मोस है, परीक्षणों में आनन्दित होना, और दृढ़ता पर जोर देना।

हम यहां अगले पैराग्राफ, श्लोक 5 से 8 में भी ध्यान देते हैं, कि वह एक बार फिर दृढ़ता की धारणा पर जोर देता है। वह स्थिर न रहने, अस्थिर होने, सहन न करने की बात करता है। तो, धन्य है वह मनुष्य जो सहन करता है, जो परीक्षण करता है।

फिर वह उस व्यक्ति के बारे में बात करता है जो बिना डगमगाए ज्ञान मांगता है, यानी कि वह ज्ञान मांगने के मामले में दृढ़ है। श्लोक 9 से 11 में, वह उन लोगों के बारे में बात करता है जो परीक्षण सहते हैं। एक बार फिर, यहां धीरज की धारणा को उठाते हुए, जो पीरासमोन, यहां सहते हैं, और एक बार फिर परीक्षणों की धारणा को उठाते हुए, पेरिस्मोस, परीक्षणों में आनंदित होते हैं, और फिर स्थायी परीक्षणों और प्रलोभनों के बारे में बात करते हैं।

फिर वही शब्द. फिर, श्लोक 12 से 15 में, वह परीक्षणों और प्रलोभनों के चरित्र के बारे में बात करता है और बात करता है, धन्य है वह जो सहन करता है। इसलिए, हम ध्यान देते हैं कि श्लोक 2 से 15 तक, इनमें से प्रत्येक पैराग्राफ में, धीरज या दृढ़ता पर एक सामान्य चिंता है।

यहां इस पैराग्राफ में, श्लोक 2 से 4 तक, इस पैराग्राफ में श्लोक 9 से 11 तक, और यहां इस पैराग्राफ में, श्लोक 12 से 15 तक, धीरज की पूरी धारणा के लिए चिंता है। तो, यह बिल्कुल स्पष्ट है कि श्लोक 2 से 15 श्लोक 16 से 27 के मुकाबले धैर्य, स्थिरता और अटूटता के साथ एक सामान्य चिंता से बंधे हैं, जैसा कि इन पैराग्राफों में से प्रत्येक में पाया जाता है, और परीक्षणों के लिए उचित प्रतिक्रिया के लिए भी एक सामान्य चिंता है। और प्रलोभन. जैसा कि हमने कुछ क्षण पहले उल्लेख किया था, यहां सामान्य चिंता, एक सामान्य चिंता जो छंद 16 से 27 को एक साथ बांधती है, धोखे से बचने की चिंता है।

हमारे पास यहां इस पैराग्राफ में यह है, जहां वह कहते हैं, निश्चित रूप से, मेरे प्यारे भाइयों, धोखा मत खाओ। हमारे पास यह इस अनुच्छेद में भी है, श्लोक 22 से 25, परन्तु वचन पर चलने वाले बनो, न कि केवल सुनने वाले, जो अपने आप को धोखा दे रहे हो। और फिर यहाँ श्लोक 26 और 27 में, यदि कोई अपने आप को धार्मिक समझे और अपनी जीभ पर लगाम न लगाए, परन्तु अपने हृदय को धोखा दे।

तो, जैसा कि मैं कहता हूं, हमारे पास धोखा, धोखा, धोखा है, और इसके विपरीत, हम इसे जानते हैं, इस सामग्री को एक साथ बांधते हैं। अब, एक और चीज़ जो श्लोक 16 से 27 तक को एक साथ जोड़ती है, वह है शब्द के प्रति सामान्य चिंता। फिर से, श्लोक 16 से 18 तक, श्लोक 18 में वह कहता है, अपनी इच्छा से, वह हमें सत्य के वचन के द्वारा बाहर लाया।

और फिर पद 21 में, नम्रता से उस प्रत्यारोपित शब्द को ग्रहण करें, जो आपकी आत्माओं को बचाने में सक्षम है। पद 22 परन्तु वचन पर चलनेवाले बनो, और केवल सुननेवाले ही न रहो, और यदि कोई वचन को सुननेवाला हो, और उस पर चलनेवाला न हो, तो अपने आप को धोखा दो।

तो, एक बार फिर, आपके पास शब्द, शब्द, शब्द, धोखा, धोखा, धोखा, ज्ञान है। स्पष्ट रूप से, तब, खंड श्लोक 15 और 16 के बीच टूट जाता है। अब, जैसा कि हमने कुछ क्षण पहले भी

उल्लेख किया था, यह अंतिम पैराग्राफ, जेम्स 1 के पहले खंड का अंतिम पैराग्राफ, और दूसरे खंड का पहला पैराग्राफ है। जेम्स 1 में ईश्वर से संबंधित एक विरोधाभास शामिल है।

श्लोक 12 से 15 में, वह यह स्पष्ट करता है कि प्रलोभन के लिए ईश्वर जिम्मेदार नहीं है। भगवान प्रलोभन नहीं देते। छंद 16 से 18 में, इसके विपरीत, वह इस बारे में बात करता है कि ईश्वर क्या देता है, कि प्रत्येक अच्छा और उत्तम दान ऊपर से होता है, रोशनी के पिता से आता है, जिसके साथ परिवर्तन के कारण कोई भिन्नता या छाया नहीं होती है।

और वह वास्तव में बात करता है, और फिर वह आगे बढ़ता है और कहता है, अपनी इच्छा से, उसने हमें सत्य के शब्द के द्वारा सामने लाया, यह दर्शाता है कि भगवान सभी अच्छे और परिपूर्ण उपहारों और विशेष रूप से शब्द के उपहार के लिए जिम्मेदार है। ईश्वर प्रलोभन नहीं देता है, लेकिन वह हर अच्छा और सही उपहार देता है, और विशेष रूप से सभी का सबसे अच्छा उपहार, शायद जेम्स सुझाव दे रहा है, और वह शब्द का उपहार है। तो, श्लोक 2 से 15 में हमारे पास जो है, वह परीक्षणों और प्रलोभनों पर ईसाई जीवन की विजय है।

छंद 16 से 27 में, वह कहते हैं, आपके पास यहां जो कुछ है वह है, शब्द की वास्तविकता और संसाधनों के अनुसार रहकर, हमें शब्द को करने और सुनने पर प्रलोभित करें, पूर्णता या पूर्णता के मामले में धोखा न खाएं। अब, इसके अलावा, हम ध्यान दें कि इस पहले भाग में, जेम्स 1 की इस पहली इकाई में, वह ज्ञान की भूमिका पर जोर देता है। वह इंगित करता है कि बिना डगमगाए ज्ञान माँगना महत्वपूर्ण है, जबकि यहाँ, इस पैराग्राफ में, वास्तव में श्लोक 22 से 25 में, वह शब्द की भूमिका के बारे में बात करता है और शब्द क्या करने में सक्षम है।

बुद्धि हमारे लिये क्या कर सकती है और वचन हमारे लिये क्या कर सकता है। फिर, यह सुझाव देता है कि जेम्स 1 के इस पहले भाग में, बुद्धि परीक्षणों और प्रलोभनों का उचित रूप से जवाब देने का साधन है और निश्चित रूप से, उस तरह की दृढ़ता का साधन है जो इस पहले भाग में आसपास के पैराग्राफ में आवश्यक है। अध्याय एक का भाग। इसी प्रकार, वह यहां शब्द और शब्द के संचालन के संबंध में क्या कहते हैं, शब्द हमारे लिए क्या करने में सक्षम है, यहां वह इस बारे में बात करते हैं कि ज्ञान क्या करने में सक्षम है, शब्द हमारे लिए क्या करने में सक्षम है, इससे पता चलता है। शब्द धोखे से बचने और ज्ञान को अपनाने का साधन है।

तो, ज्ञान के अनुसार जीवन जीने से परीक्षणों और प्रलोभनों पर ईसाई जीवन की विजय होती है। यहां, शब्द की वास्तविकता और संसाधनों के अनुसार जीने से, शब्द को करने और सुनने पर जोर देने से, इससे धोखा नहीं खाया जाएगा बल्कि एक प्रकार के ज्ञान को अपनाया जाएगा जिस पर हम काबू पा लेंगे। अब, संरचनात्मक संबंधों के संदर्भ में, हमारे पास, निश्चित रूप से, सामान्यीकरण और विशिष्टता के साथ एक विरोधाभास है।

हम यहां भगवान की गतिविधियों के संदर्भ में परीक्षणों और प्रलोभन और धोखे के चरित्र और उनके बीच संबंध पर ध्यान देते हैं। जैसा कि मैं कहता हूं, भगवान के संबंध में, और इसका संबंध, निश्चित रूप से, उस महान केंद्रीय खंड के साथ है, श्लोक 12 से 18, भगवान, प्रलोभन के संबंध

में, प्रलोभन नहीं देता है। इसमें वास्तव में 1.12 से 15 में परीक्षणों या प्रलोभनों के संबंध में एक सामान्य कथन शामिल है, जो वास्तव में छंद 2 से 11 के विवरण का सामान्यीकरण है।

धोखे के संबंध में, भगवान के साथ, धोखे के संबंध में, वह स्पष्ट करता है कि हमें धोखा नहीं देना चाहिए। ईश्वर सभी अच्छे और उत्तम उपहारों का एकमात्र दाता है, विशेष रूप से शब्द का उपहार। तो, श्लोक 16 से 18 में धोखे के संबंध में सामान्य कथन शामिल हैं, जिसे वह आगे बढ़ाता है और श्लोक 19 से 27 में विशिष्ट करता है।

अब, इससे परे, निश्चित रूप से, हम इसके संबंध में प्रश्न उठाते हैं। जैसा कि मैंने पहले उल्लेख किया है, हमें वास्तव में इन प्रश्नों को पढ़ने में समय नहीं लगेगा, लेकिन वे यहाँ हैं। हमारे पास एक आवर्ती उपकरण भी है।

हमने उल्लेख किया है कि ज्ञान परीक्षणों और प्रलोभनों पर काबू पाने का साधन प्रतीत होता है। अर्थात्, परीक्षणों और प्रलोभनों से नष्ट होने के बजाय आध्यात्मिक विकास के लिए उनका उपयोग करना। वास्तव में, हम परीक्षाओं और प्रलोभनों पर कैसे विजय पा सकते हैं? हम परीक्षणों और प्रलोभनों का उपयोग उनसे नष्ट होने के बजाय आध्यात्मिक विकास के लिए कैसे कर सकते हैं? यह उस बुद्धि के माध्यम से है जो परमेश्वर देता है जो परमेश्वर से आती है।

फिर, निस्संदेह, शब्द को सुनना और करना विभिन्न धोखे के नुकसान से बचने का साधन है। बेशक, यहाँ ज्ञान और शब्द के बीच, इस साधन के बीच, जो जेम्स 1 के पहले भाग में प्रमुख साधन है, और इस अर्थ के बीच, जो जेम्स 1 के दूसरे भाग में प्रमुख साधन है, एक संबंध हो सकता है। फिर से हम उसी को लेकर सवाल उठाते हैं। फिर, हमारे यहाँ भी है, जैसा कि हमने पहले उल्लेख किया है, कारण और पुष्टि की पुनरावृत्ति, हॉर्टटरी पैटर्न।

हम ध्यान देते हैं कि उपदेश वास्तव में सिद्धांतों या ज्ञान पर ध्यान केंद्रित करते हैं, किसी को क्या जानना या समझना है, बनाम विशिष्ट व्यवहार संबंधी मांगें जो कि पुस्तक के बाकी हिस्सों में हैं। फिर, हमारे पास विरोधाभास की पुनरावृत्ति भी है, यहां दो तरीके हैं, जिन्हें हमने पूरी किताब में देखा है, लेकिन यह यहां एक विशिष्ट रूप लेता है, बुद्धिमान और स्थिर के बीच एक विरोधाभास, करना है, जिसमें वास्तव में पूर्णता शामिल है एक ओर, बनाम नासमझ या अस्थिर, जिसमें दूसरी ओर अराजकता और विभाजन शामिल है। इसलिए, जो लोग संदेह न करते हुए ज्ञान और विश्वास मांगते हैं, उन्हें मिलेगा, जबकि उन लोगों को नहीं मिलेगा जो संदेह में भगवान से प्रार्थना करते हैं, जो दोहरे दिमाग वाले हैं, जो अस्थिर हैं, उन्हें नहीं मिलेगा।

इसके अलावा, बुद्धिमानों के पक्ष में दीन, गरीब और उत्पीड़ित हैं, जिन्हें ऊंचा उठाया जाएगा और जो सहन करेंगे। दूसरी ओर, अमीरों को अपमान और निधन की विशेषता होती है। शब्द के कर्ता-धर्ता और सुनने वालों की तुलना केवल शब्द सुनने वालों से की जाती है, और सच्चे और निष्कलंक धर्म की तुलना व्यर्थ धर्म से की जाती है।

और फिर, हमारे पास ये प्रश्न हैं जो हम पूछ सकते हैं। मुख्य छंद या रणनीतिक क्षेत्र, निश्चित रूप से, प्रमुख संरचनात्मक संबंधों का प्रतिनिधित्व करते हैं जिन्हें हमने 1:12-18 में पहचाना है और

सामान्यीकरण और विशिष्टता के साथ, जैसा कि हमने वहां उल्लेख किया है, विरोधाभास का प्रतिनिधित्व करते हैं। और इसका संबंध उन चीजों के बीच विरोधाभास से है जो ईश्वर नहीं देता या प्रदान नहीं करता, प्रलोभन, वह जो देता या प्रदान करता है, अच्छे उपहार और विशेष रूप से वचन का उपहार।

और, निःसंदेह, जैसा कि हमने उल्लेख किया है, श्लोक 12-15 में धीरज के संबंध में और श्लोक 2-11 में परीक्षणों और प्रलोभनों के संबंध में अधिक विशेष रूप से जो कहा गया है उसका सामान्यीकरण किया गया है। और, निस्संदेह, छंद 19-27 उन सामान्य बयानों को विशिष्ट करता है जो वह धोखे के संबंध में और छंद 16-18 में शब्द के संबंध में देता है। तो, वास्तव में यही है, कम से कम मैं यहां जेम्स अध्याय 1 के खंड को देखूंगा। जैसा कि मैं कहता हूं, यह कुछ हद तक सूक्ष्म है।

तर्क की इस प्रकार की सूक्ष्मता अपेक्षित थी, और उस समय और उस संस्कृति और उपसंस्कृति के पाठक इससे परिचित होंगे। उनके लिए इसे समझना कुछ हद तक आसान होगा, जैसा कि मैं कहता हूं, आधुनिक पश्चिमी लोगों के लिए जो इस तक पहुंचते हैं और उन्हें बहुत अधिक यादृच्छिकता दिखाई देती है। लेकिन जैसा कि मैं कहता हूं, आपके पास यहां ये दोहराव हैं जो जेम्स 1 के पहले भाग को एक साथ बांधते हैं, अन्य दोहराव जो जेम्स 1 के दूसरे भाग को एक साथ बांधते हैं।

ज्ञान का यह व्यवसाय जेम्स के पहले भाग में आपके द्वारा दिए गए उपदेशों का साधन है, शब्द, फिर से, ज्ञान का उपहार जेम्स 1 के पहले भाग में मांगों को पूरा करने का साधन है, शब्द का भगवान का उपहार है जेम्स 1 के उत्तरार्ध में मांगों को पूरा करने के साधन। श्लोक 12-18 में जो टिका है वह इस बात से विपरीत है कि ईश्वर प्रलोभन नहीं देता है। निस्संदेह, यह खंड के पहले भाग में प्रलोभन विषय से जुड़ा है। ईश्वर हर अच्छा और उत्तम उपहार देता है, विशेष रूप से शब्द का उपहार, जो जेम्स के दूसरे भाग में आपके पास मौजूद शब्द पर जोर देने के साथ जुड़ा हुआ है।

खैर, हमने पिछले खंड में बताया था कि अवलोकन के तीन स्तर होते हैं। हमने पहले दो के बारे में बात की है। यानि कहें तो किताब का सर्वे।

इसलिए, हमने यहूदा की पुस्तक के सर्वेक्षण और जेम्स को लिखी पत्री के सर्वेक्षण, पुस्तक सर्वेक्षण को देखा है। हमने खंडों के सर्वेक्षण के बारे में बात की है और हमने अभी जेम्स अध्याय 1 के सर्वेक्षण की जांच की है। जैसा कि आपको याद है, अवलोकन का तीसरा स्तर विवरणों के केंद्रित अवलोकन से संबंधित है। विवरणों के केंद्रित अवलोकन में या तो विस्तृत अवलोकन या विस्तृत विश्लेषण शामिल हो सकता है।

और हम उनमें से प्रत्येक को देखना चाहते हैं और विवरणों के केंद्रित अवलोकन के लिए उनमें से प्रत्येक संभावना का एक उदाहरण देना चाहते हैं। अब, हम वास्तव में उस संभावना से शुरुआत करते हैं जिसे हम विस्तृत विश्लेषण कहते हैं। किसी अनुच्छेद के विवरण पर विस्तृत, केंद्रित अवलोकन करने की यह एक संभावना है।

और विस्तृत अवलोकन में, हम वास्तव में पद्य दर पद्य के माध्यम से आगे बढ़ते हैं। हम उन टिप्पणियों से शुरुआत करते हैं जो समग्र रूप से कविता से संबंधित हैं। और फिर, ऐसा करने के बाद, हम पद्य खंड दर खंड आगे बढ़ते हैं, खंडों का संपूर्ण अवलोकन प्रासंगिक बनाते हैं और फिर खंड के भीतर अलग-अलग शब्दों या वाक्यांशों का अवलोकन करते हैं।

अब, विस्तृत अवलोकन के संदर्भ में, मूलतः पाँच प्रकार के अवलोकन हैं जिन्हें करना प्रासंगिक है। पहले प्रकार के अवलोकन को हम टर्मिनल अवलोकन कहते हैं। ये शर्तों के संबंध में टिप्पणियाँ हैं।

स्पष्ट रूप से पर्याप्त, कहने का अर्थ है, व्यक्तिगत शब्दों के संबंध में टिप्पणियाँ। अब, टर्मिनल अवलोकन में कोई क्या कर सकता है, इसकी कुछ संभावनाएं हैं। एक तो शब्द के मूल पर ध्यान देना है।

कहने का तात्पर्य यह है कि कोई शब्द का शब्दकोश रूप कह सकता है। यह अक्सर पर्याप्त होता है। और इसलिए, उदाहरण के लिए, यदि आपके पास, मान लीजिए, उसने जो अभिव्यक्ति गाई है, उसका मूल गाना होगा।

अब, मैं यहां केवल यह कहना चाहता हूं कि यदि आप ग्रीक का उपयोग करने में सक्षम हैं, तो यह वह जगह है जहां आप ग्रीक को बहुत उपयोगी और महत्वपूर्ण तरीके से ला सकते हैं। इसलिए, उदाहरण के लिए, और मैंने इसका उल्लेख किया है, यदि आप ग्रीक नहीं जानते हैं, तो कोई बात नहीं। लेकिन यदि आपके पास एल्थॉन शब्द है, तो आप मूल के संदर्भ में जान सकते हैं कि यह एक्सोर्माई से आया है।

यह वास्तव में शब्द में जो कुछ शामिल है, शब्द का शाब्दिक रूप, उसे स्पष्ट करता है। साथ ही, शब्द का विभक्ति। अब, विभक्ति का संबंध वास्तव में शब्द के रूप में परिवर्तन से है जो इसके व्याकरणिक अर्थ और महत्व को इंगित करता है।

शब्द के रूप में परिवर्तन जो उसके व्याकरणिक अर्थ और महत्व को दर्शाता है। तो, उसके द्वारा गाए जाने के मामले में, यह गाने का तीसरा व्यक्ति एकवचन, सरल अतीत या भूतकाल का सक्रिय संकेत होगा। एल्थॉन के मामले में, यह, निश्चित रूप से, एक्सोर्माई का एक तीसरा-व्यक्ति विलक्षण, सिद्धांतवादी सक्रिय संकेतक है।

तो, यह, और हम आने वाले हैं, जब हम व्याख्या को देखते हैं, तो हम विभक्तियों के महत्व पर ध्यान देंगे। लेकिन वैसे भी, शब्द का मूल, मूल धातु, शब्द की विभक्तियाँ, शब्द में परिवर्तन करती हैं जो उसके व्याकरणिक अर्थ और महत्व को दर्शाती हैं।

क्या कोई शब्द शाब्दिक या लाक्षणिक रूप से प्रयुक्त होता प्रतीत होता है? इसके अलावा, दूसरे प्रकार का अवलोकन व्याकरणिक अवलोकन है। ये वास्तव में शब्दों या वाक्यांशों के वाक्य-विन्यास के संबंध में व्याकरणिक कार्य के संबंध में अवलोकन हैं। विषय, विधेय, पूर्वसर्गीय वाक्यांश जैसी चीज़ें, इस प्रकार की चीज़ें।

अब, मुझे नहीं लगता कि वाक्यविन्यास के व्याकरणिक विश्लेषण में बहुत अधिक विस्तार में जाना वास्तव में आवश्यक या आमतौर पर सहायक है। लेकिन कभी-कभी, जब व्याख्या की बात आती है तो ये अवलोकन काफी महत्वपूर्ण होते हैं। ऐसा कहा जाता है कि लूथर ने कहा था, हालाँकि मैं लूथर के स्वयं के कार्यों में इसका पता लगाने में सक्षम नहीं हूँ, कि सुसमाचार पूर्वसर्गों में है।

लेकिन कभी-कभी ऐसा ही होता है। कभी-कभी, किसी वाक्य की व्याकरणिक विशेषताएं यह समझने के लिए बेहद महत्वपूर्ण होती हैं कि वहां क्या है, और उनका धार्मिक महत्व भी है। मैं अभी उन अंशों के बारे में सोच सकता हूँ जिनकी व्याख्या वास्तव में वाक्य की व्याकरणिक संरचना से बहुत अधिक प्रभावित होती है।

वास्तव में, मैं महान आयोग के बारे में सोच रहा हूँ, मैथ्यू 28:19 से 20ए में प्रसिद्ध महान आयोग। जाओ, सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ, और उन्हें पिता, पुत्र, और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो, और जो कुछ मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है उन सब का पालन करना सिखाओ। यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि, वास्तव में, आपके पास महान आयोग में एक मुख्य क्रिया है, जो शिष्य बनाना है।

ग्रीक में, संयोग से, यह सिर्फ एक शब्द है, गणित करना, शिष्य बनाना। इसके पहले एक कृदंत आता है। वास्तव में, ग्रीक में, यह एक सिद्धांतवादी कृदंत है, जाना या जाना।

और इसके बाद दो वर्तमान कृदंत हैं, बपतिस्मा देना और सिखाना, ताकि मैथ्यू 28:19 से 20ए के महान आयोग की व्याकरणिक संरचना से पता चलता है कि मुख्य मुद्दा, उस कथन का केंद्र, क्रिया शिष्य बनाना है। इससे यह सवाल उठता है कि कृदंत, सिद्धांतवादी कृदंत, मुख्य क्रिया से कैसे संबंधित हैं और वर्तमान कृदंत, बपतिस्मा देना और सिखाना, मुख्य क्रिया से कैसे संबंधित हैं। इसलिए, जैसा कि मैं कहता हूँ, यह उस दावे के केंद्र की ओर इशारा करता है, साथ ही उन तरीकों की ओर भी इशारा करता है जिनमें महान आयोग में अन्य महत्वपूर्ण शब्द शिष्य बनाने के साथ उस केंद्रीय चिंता से संबंधित हैं।

अब, मैं बस यह कहना चाहता हूँ कि टर्मिनल अवलोकन और व्याकरणिक अवलोकन दोनों के संबंध में, आज अधिकांश लोग इस प्रकार के व्याकरणिक विश्लेषण में कुशल नहीं हैं। अंग्रेजी भाषा कौशल के इस प्रकार के पहलुओं के मामले में वे कुछ हद तक कमजोर हैं। यदि, निःसंदेह, आप ग्रीक जानते हैं, तो यह कोई समस्या नहीं है।

आप ग्रीक के साथ काम करेंगे, और निस्संदेह यही एक कारण है कि ग्रीक जानना महत्वपूर्ण है। लेकिन मैं दो कार्यों, दो पुस्तकों का उल्लेख करना चाहूँगा जो आपके लिए उपयोगी हो सकती हैं। सबसे पहले, फ्रांसिस ब्रौन की एक पुस्तक है, ब्रौन।

यह तो बस एक बहुत छोटी किताब है, फ्रांसिस ब्रौन। और इस पुस्तक का शीर्षक है भाषा के विद्यार्थियों के लिए अंग्रेजी व्याकरण। यह वास्तव में भाषण के प्रमुख भागों पर बहुत सीधे तरीके से चर्चा करता है।

एक और किताब जिसका मैं उल्लेख करूंगा वह है हारब्रेस कॉलेज हैंडबुक। हारब्रेस कॉलेज हैंडबुक, यह अंग्रेजी व्याकरण पर प्रथम वर्ष का कॉलेज प्राइमर है। यह शब्दों के विभक्ति और वाक्यविन्यास, वाक्य के भीतर शब्दों या वाक्यांशों के व्याकरणिक कार्य दोनों के मुद्दों से संबंधित है।

विषय, विधेय, प्रत्यक्ष वस्तु, पूर्वसर्ग की वस्तु, इस प्रकार की चीजें। यहां विस्तृत अवलोकन में तीसरा संभावित प्रकार का अवलोकन संरचनात्मक है। उसी प्रकार के संरचनात्मक संबंध जिन्हें हमने समग्र रूप से पुस्तक के स्तर पर और समग्र रूप से खंड के स्तर पर क्रियाशील देखा है, पैराग्राफों में, वाक्यों के भीतर और यहां तक कि खंडों के भीतर भी मौजूद हैं।

संरचना के प्रति सचेत रहना महत्वपूर्ण है और आप जिस भी स्तर पर काम कर रहे हैं, इन संरचनात्मक संबंधों के प्रति हमेशा जागरूक रहें। यहाँ, निःसंदेह, वाक्य या पैराग्राफ के स्तर पर। एक अन्य प्रकार का अवलोकन तार्किक अवलोकन है।

इसमें, जैसा कि मैंने बताया, किसी पद या कथन के तार्किक कार्य के संबंध में टिप्पणियाँ शामिल हैं। यह शब्द या कथन द्वारा व्यक्त किये गये अर्थ का प्रकार है। पद या कथन द्वारा व्यक्त किये गये अर्थ का प्रकार।

इसे रखने का दूसरा तरीका वह मुद्दा है जिसका शब्द या कथन से संबंध है। यदि, उदाहरण के लिए, आपके अनुच्छेद में शब्द है, आपके पास सभी शब्द हैं, तो आप जानते हैं कि यह दायरे के मुद्दे से संबंधित है। सभी समावेशी दायरे वाले हैं; कुछ का आंशिक दायरा है, और किसी का भी विशेष दायरा नहीं है।

या यदि आपके पास, उदाहरण के लिए, वाक्यांश लोगों की एक बड़ी भीड़ है, जो वास्तव में सीमा तक, और अधिक विशेष रूप से संख्यात्मक सीमा तक इंगित करता है। यह संख्यात्मक सीमा के मुद्दे से संबंधित है। या, निश्चित रूप से, जैसा कि मैंने कहा, आपके पास कुछ उदाहरण हैं।

वास्तव में, इन तार्किक टिप्पणियों के संबंध में, आइए, यहां जॉन अध्याय 9 के एक अंश को देखें। और बस इस बात पर ध्यान दें कि इस परिच्छेद पर हम किस प्रकार की तार्किक टिप्पणियाँ कर सकते हैं। यूहन्ना 9, 1 से 4. ठीक है, वास्तव में, हम केवल 1 से 3 कहते हैं। यूहन्ना 9, 1 से 3. जैसे ही वह, केवल कहने के लिए, यीशु पास से गुजरा, उसने एक आदमी को देखा जो जन्म से अंधा था, और उसके शिष्यों ने उससे पूछा, रब्बी, किसने पाप किया, इस आदमी ने या उसके माता-पिता ने, कि वह अंधा पैदा हुआ? यीशु ने उत्तर दिया कि ऐसा नहीं है कि इस आदमी ने या उसके माता-पिता ने पाप किया है, बल्कि इसलिए कि परमेश्वर के कार्य उसमें प्रकट हो सकें।

जैसा कि हम इसे देखते हैं, हमें एक बार फिर बाइबिल खोलनी चाहिए। तो, हम इस परिच्छेद पर किस प्रकार की तार्किक टिप्पणियाँ कर सकते हैं? जैसे ही वह गुजरा, पहले वाक्यांश पर ध्यान दें। यह मुठभेड़ के तरीके के मुद्दे की ओर इशारा करता है।

और अधिक विशेष रूप से, हम ध्यान दें कि मुठभेड़ का तरीका, एक ओर, आकस्मिक था क्योंकि वह वहां से गुजर रहा था। दूसरी ओर, यह स्पष्टतः अप्रत्याशित था। जब वह वहां से गुजरा तो उसने एक जन्मांध व्यक्ति को देखा।

अब, इसके स्पष्ट रूप से अप्रत्याशित होने का मामला वास्तव में पद 3 के साथ तनाव में है। यीशु कहते हैं कि ऐसा नहीं था कि इस व्यक्ति ने पाप किया था या उसके माता-पिता ने, बल्कि इसलिए कि ईश्वर के कार्य उसमें प्रकट हो सकते थे। तो, दूसरे शब्दों में, श्लोक 1 में यह स्पष्ट रूप से अप्रत्याशित मुठभेड़ इस व्यक्ति के अंधेपन को एक अवसर बनाने के दिव्य इरादे के साथ तनाव में है, वास्तव में, भगवान के कार्यों को उसमें प्रकट किया जा रहा है जब यीशु उसे ठीक करेगा। इसके अलावा, श्लोक 1 में, हम देखते हैं, जब वह पास से गुजर रहा था, उसने एक आदमी को जन्म से अंधा देखा।

इसका संबंध धारणा से है, यीशु की धारणा से। ध्यान दें कि यीशु देखता है लेकिन यह आदमी अंधा है। निःसंदेह, अन्य तरीके हैं जिनसे वह इस मुठभेड़ को व्यक्त कर सकता था, उसने एक आदमी को देखा।

वह कह सकता था, उदाहरण के लिए, वह एक आदमी से मिला, या उसकी मुलाकात एक आदमी से हुई, या उसका एक आदमी से सामना हुआ, लेकिन उसने एक आदमी को जन्म से अंधा देखा। फिर, जन्म से अंधा मुहावरा उसकी हालत की ओर इशारा करता है। अधिक विशेष रूप से, ये सभी तार्किक अवलोकन हैं जो उन मुद्दों की पहचान करते हैं जो इन शब्दों या वाक्यांशों में शामिल हैं।

जैसा कि मैं कहता हूं, जन्म से अंधा होना मनुष्य की स्थिति की ओर इशारा करता है, और यह उसकी स्थिति की सीमा, जन्म से उसकी स्थिति की सीमा या अवधि और उसकी स्थिति के चरित्र, अप्राप्य और निराशाजनक को व्यक्त करता है। और फिर, श्लोक 2 में, उनके शिष्यों ने उनसे पूछा, आपके यहाँ जो कुछ है वह एक प्रश्नवाचक प्रतिक्रिया है। यह शिष्यों की ओर से प्रश्नवाचक प्रतिक्रिया है, प्रश्नवाचक का संबंध प्रश्न से है।

शिष्य इस स्थिति का उत्तर एक प्रश्न के साथ देते हैं। और उसके चेलों ने उस से पूछा, हे रब्बी, किस ने पाप किया था, इस मनुष्य ने या उसके माता-पिता ने, कि वह अंधा पैदा हुआ? तो फिर, आपके पास यहां जो कुछ है, वह सीमित विकल्पों को प्रस्तुत करना है। सीमित विकल्प.

और उनकी प्रतिक्रिया का फोकस, उनकी पूछताछ प्रतिक्रिया जहां वे सीमित विकल्प सामने रखते हैं, उसमें एजेंसी का मुद्दा भी शामिल है, वास्तव में, सबसे पहले, एजेंसी का मुद्दा शामिल है। पाप किसने किया, इस आदमी ने या उसके माता-पिता ने? वास्तव में, मानव एजेंसी। इस आदमी की इस हालत के लिए कौन सा इंसान या कौन सा इंसान जिम्मेदार था? और मैं कहता हूं कि इसका संबंध वास्तव में सीमित विकल्पों से है।

कहने का तात्पर्य यह है कि, वे कहते हैं, यह या तो उसके माता-पिता हैं या वह। और वे जो करते हैं वह यह है कि वे मानवीय नैतिक विफलता से एक कारणात्मक संबंध मानते हैं। कहने का

तात्पर्य यह है कि, यह अंधापन या तो उसके माता-पिता की ओर से या मनुष्य की ओर से मानवीय नैतिक विफलता का परिणाम था।

पाप किसने किया, इस आदमी ने या उसके माता-पिता ने? अब, इस बिंदु पर, हमारे पास वास्तव में एक प्रकार की अस्थायी पहेली है। फिर, यह एक तार्किक अवलोकन है। क्या आपको इस कथन में किसी प्रकार की समस्या नहीं है? विशेष रूप से समस्या का संबंध पहले विकल्प से है जिसका उन्होंने उल्लेख किया है।

रब्बी, पाप किसने किया, इस आदमी ने या उसके माता-पिता ने? वे उसके अंधेपन के बारे में बात करते हैं, इस आदमी का अंधापन जो जन्म से अंधा था, जो अंधा पैदा हुआ था, उसके पाप का परिणाम था। तो फिर, जन्म के समय अंधापन इस व्यक्ति के पाप का परिणाम कैसे हो सकता है? क्या वे सुझाव दे रहे हैं कि उसने पिछले जन्म में पाप किया था या किसी तरह उसके जीवन में पाप पूर्वप्रभावी था? लेकिन वैसे भी, यहाँ तनाव है। यह बिल्कुल भी स्पष्ट नहीं है कि इस व्यक्ति के पाप के कारण वह अंधा कैसे पैदा हुआ।

अब, यीशु यहाँ श्लोक 3 में उत्तर देते हैं। यीशु ने उत्तर दिया कि ऐसा नहीं था कि इस व्यक्ति ने या उसके माता-पिता ने पाप किया था, बल्कि इसलिए कि परमेश्वर के कार्य उसमें प्रकट हो सकें। तो फिर, हमारे पास यीशु की ओर से एक नकारात्मक अस्वीकृति और एक सकारात्मक सुधार है। वह नकारात्मक रूप से इंगित करके शुरू करता है कि यह क्या नहीं था।

वह कहते हैं, ऐसा नहीं था कि इस आदमी ने या उसके माता-पिता ने पाप किया था। आप देखिए, यह वास्तव में उनके सीमित विकल्पों, उनकी संभावित व्याख्या का एक प्रकार का खंडन है। लेकिन फिर सकारात्मक सुधार के मामले में, मामला क्या है, उनके दृष्टिकोण के लिए एक सुधारात्मक, लेकिन भगवान के कार्यों को उसमें प्रकट किया जा सकता है।

यीशु तब इंगित करते हैं कि मुद्दा कारण नहीं है, मानवीय कारण नहीं है, बल्कि दैवीय उद्देश्य है। मुद्दा यह नहीं है कि इस आदमी के अंधेपन का कारण क्या है। मुद्दा इस आदमी के अंधेपन का उद्देश्य है।

यह होना नहीं है; यह इस बात का मामला नहीं है कि मनुष्यों ने कारण के रूप में क्या किया, बल्कि यह बात है कि ईश्वर दिव्य इरादे के संदर्भ में क्या प्रस्तावित करता है। इसलिए, जैसा कि मैं कहता हूँ, ये कुछ संभावित प्रकार के तार्किक अवलोकन हैं जो हम किसी अनुच्छेद पर कर सकते हैं। अब, हमारे पास प्रासंगिक अवलोकन भी हैं।

ये कविता में देखे जा रहे तत्वों और आसपास की सामग्री में पाई जाने वाली चीजों के बीच संबंध के बारे में टिप्पणियाँ हैं, खासकर तात्कालिक संदर्भ में। इस परिच्छेद में हमारे पास क्या है और तात्कालिक संदर्भ में हमारे पास क्या है, इसके बीच क्या संबंध हैं? आमतौर पर, छंद हमारे अनुच्छेद से तुरंत पहले और बाद में आते हैं। अब, जैसा कि मुझे लगता है कि हमने अब तक इन सभी वीडियो में देखा है, विधि के इन विभिन्न पहलुओं में क्या शामिल है, इसे पूरी तरह से समझने का, प्रभावी ढंग से समझने का तरीका वास्तव में पाठ पर लागू इन चीजों के उदाहरण देखना है।

और इसलिए, हम आगे बढ़ना चाहते हैं और जेम्स अध्याय 1, श्लोक 5 से 8 तक के विस्तृत अवलोकन को देखना चाहते हैं। और फिर, उन चीजों पर विचार करें जिन्हें आप इस अनुच्छेद के संबंध में नोट कर सकते हैं। और फिर हम जेम्स 1, श्लोक 5 से 8 तक का विस्तृत अवलोकन लाएंगे। हम इसे, निश्चित रूप से, बहुत ही पारदर्शी तरीके से करना चाहते हैं।

ठीक है। मुझे लगता है कि समग्र रूप से परिच्छेद से संबंधित टिप्पणियाँ करके शुरुआत करना वास्तव में एक उपयोगी चीज़ है। संपूर्ण परिच्छेद के अवलोकन आम तौर पर या तो प्रासंगिक या संरचनात्मक होते हैं।

इस मामले में, श्लोक 5 से 8 तक, समग्र रूप से परिच्छेद, ठीक पूर्ववर्ती और निम्नलिखित छंदों से कैसे संबंधित है? और इस मामले में, श्लोक 5 से 8 तक, समग्र रूप से परिच्छेद की संरचना कैसी है? केवल छंद 5 से 8 के सर्वेक्षण जैसा कुछ करें। खैर, प्रासंगिक अवलोकन के संदर्भ में, हम ध्यान दे सकते हैं कि 1:5 से 8 तक उपकरण के संदर्भ में इसके तत्काल संदर्भ से संबंधित हो सकता है। अर्थात्, यहाँ वर्णित गवाह परीक्षणों और प्रलोभनों से सकारात्मक और प्रभावी ढंग से निपटने का साधन हो सकता है जैसा कि पिछले पैराग्राफ, छंद 2 से 4 में बताया गया है, और जैसा कि अगले पैराग्राफ, छंद 9 से 15 में बताया गया है। यह भी हो सकता है इसमें सामान्यीकरण और विशिष्टता का तत्व शामिल है।

सामान्य विवरण, मेरा मतलब यहां ज्ञान के सामान्य विवरण से है, उसे विशिष्ट सामग्री के साथ वर्णित किया जा सकता है, उचित रूप से प्रतिक्रिया देने में ज्ञान की विशिष्ट अभिव्यक्ति के संदर्भ में विशेषीकृत किया जा सकता है, यानी बुद्धिमानी से, छंदों में परीक्षणों और प्रलोभनों का जवाब दिया जा सकता है। 2 से 4 और 9 से 15, और परीक्षणों और प्रलोभनों से संबंधित, श्लोक 2 से 4 में धन और गरीबी दोनों के खतरों से और फिर, श्लोक 9 से 15 तक। मेरा सुझाव है कि ज्ञान यहां साधन हो सकता है, इसका कारण यह है कि वह इस बात पर जोर देते हैं कि बुद्धि ईश्वर का उपहार है। और हो सकता है कि वह सुझाव दे रहा हो कि यह दिव्य उपहार वास्तव में उस तरह की मानवीय प्रतिक्रिया की संभावना प्रदान करता है जिसकी वह आसपास के संदर्भ में मांग करता है।

अब, उससे आगे, अनुच्छेदों के संदर्भ में, संपूर्ण अवलोकन का, इसका संबंध अनुच्छेद की संरचना से है। हम ध्यान दें कि छंद 5 से 8 को उपकरण की पुनरावृत्ति के साथ कार्य-कारण के अनुसार संरचित किया जा सकता है। अब, निःसंदेह, यह हमेशा महत्वपूर्ण है कि हम पूरी तरह से समझाएं कि इससे हमारा क्या मतलब है।

अर्थात्, श्लोक 5ए, यदि किसी में बुद्धि की कमी है, तो यह एक आधार या कारण है, बुद्धि की कमी दो उपदेशों का आधार या कारण है। यदि किसी को बुद्धि की घटी है, और इसलिये कि उस में बुद्धि की घटी है, तो वह परमेश्वर से मांगे। और, पद 6, उसे विश्वास से माँगने दो।

क्योंकि बुद्धि की कमी के कारण एक व्यक्ति को भगवान से पूछना चाहिए, इसका संबंध, वैसे, पूछने की दिशा से है, और विश्वास से पूछना है, जो कि पूछने का एक तरीका है। माँगने की दिशा,

भगवान से मांगो, मांगने का ढंग, विश्वास से, संदेह से नहीं। फिर, इनमें से प्रत्येक उपदेश के बाद एक पुष्टिकरण होता है, एक कारण कि उपदेश का पालन क्यों किया जाना चाहिए।

वह ईश्वर से मांगे, जो सभी मनुष्यों को उदारतापूर्वक और बिना किसी उलाहना के देता है, और उसे दिया जाएगा। दूसरे शब्दों में, उसे ईश्वर से माँगने दें, क्योंकि ईश्वर सभी मनुष्यों को उदारतापूर्वक और बिना किसी उलाहना के देता है, और क्योंकि उस व्यक्ति की आवश्यकता के अनुसार ज्ञान उसे दिया जाएगा। श्लोक 6 में उपदेश में, उसे बिना किसी संदेह के विश्वास के साथ पूछना चाहिए, फिर उसकी पुष्टि करना, क्योंकि जो संदेह करता है वह समुद्र की लहर की तरह है जो हवा से चलती और उछलती है।

उस व्यक्ति को यह नहीं सोचना चाहिए कि एक दोहरे दिमाग वाला व्यक्ति, जो अपने सभी तरीकों से अस्थिर है, प्रभु से कुछ भी प्राप्त करेगा। मैं कहना चाहता हूँ, इसकी शुरुआत यहां आपके पास मौजूद कारण से होती है। यदि किसी में बुद्धि की कमी है, तो यह एक स्थिति है।

वैसे, इसमें एक तरह की समस्या भी शामिल है, इसलिए पूछताछ, समस्या, समाधान। बुद्धि की कमी एक ऐसी समस्या है जिसका समाधान या समाधान इन उपदेशों को पूरा करने से होता है जिन्हें वह देने के लिए आगे बढ़ता है। तो, वैसे भी, प्रभाव तो यह है, ज्ञान की इस कमी का प्रभाव है, ये दो उपदेश हैं।

प्रार्थना करने वाले पर जोर देते हुए ईश्वर से पूछें, जिससे प्रार्थना की जाती है उससे प्रार्थना करें, और वास्तव में प्रार्थना की दिशा, पर्याप्तता के साथ, जैसा कि हमने अभी देखा, क्योंकि ईश्वर सभी व्यक्तियों को उदारतापूर्वक और बिना किसी निंदा के देता है, और यह दिया जाएगा उस व्यक्ति। और फिर दूसरा उपदेश, उसे विश्वास से पूछने दें, यह सकारात्मक है, संदेह नहीं है, एक तरीका है, इसमें वास्तव में यहां प्रार्थना शामिल है, प्रार्थना की गई, दिव्य, प्रार्थना, मानव, और प्रार्थना का तरीका, या प्रार्थना का तरीका, विश्वास में, संदेह नहीं, और फिर आगे बढ़ता है और उस उपदेश को पुष्ट करता है। तुम्हें ऐसा करने का कारण यह है कि निःसंदेह, विश्वास के साथ और निःसंदेह, क्योंकि जो समुद्र की लहरों की नाई जो हवा से उठती और उछलती है, उसे डुबा देता है, वह ऐसा न समझे कि वह दोचित्त, अस्थिर मनुष्य है। अपने सभी तरीकों से, प्रभु से कुछ भी प्राप्त करेगा।

तो, यह वास्तव में इस मार्ग की संरचना है। आप देख सकते हैं कि यह सब एक साथ कैसे फिट बैठता है और श्लोक 5 से 8 तक का विवरण, प्रत्येक विवरण इस पैराग्राफ के कार्यक्रम के संदर्भ में समग्र रूप से कैसे फिट बैठता है। अब, हम पद्यांश के श्लोक दर श्लोक और खंड के भीतर, खंड दर खंड पर काम करने के लिए आगे बढ़ते हैं।

हम ध्यान दें कि श्लोक 5 कारण कथन से शुरू होता है यदि किसी के पास ज्ञान की कमी है। यह कथन वास्तव में एक प्रथम श्रेणी का सशर्त कथन है जब भी आपके पास यदि, यदि आपके पास कोई सशर्त कथन है; यह एक व्याकरणिक अवलोकन है।

और वैसे, यह एक तरह की तकनीकी अभिव्यक्ति है, लेकिन इसे समझना कठिन नहीं है। एक सशर्त खंड में, यदि खंड को प्रोटैसिस कहा जाता है, और तत्कालीन खंड को एपोडोसिस कहा जाता है। और प्रोटैसिस और एपोडोसिस के बीच हमेशा एक कारणात्मक संबंध होता है।

तो, यदि खंड हमेशा कारण होता है, और तत्कालीन खंड हमेशा एक तथ्य होता है। और निःसंदेह, आपके पास यहाँ यही है। अब बात आगे बढ़ती है तो विषय कोई भी हो।

हम आप में से किसी को नोट करते हैं। इसमें समावेशिता के वास्तविक तत्व शामिल हैं। यदि कोई है, तो यह कहता है कि यदि आपमें से किसी में ज्ञान की कमी है, तो इसका समावेशी दायरा है।

निस्संदेह, इसमें एक ही समय में कोई भी शब्द शामिल है, जो वास्तव में, यदि आप में से कोई है, लेकिन साथ ही, यहां प्रतिबंध का एक तत्व भी है। यदि तुम में से किसी में बुद्धि की कमी है। इसलिए, उन्होंने जो कहा वह वास्तव में विशेष रूप से पाठकों से संबंधित है, जिन्हें उन्होंने श्लोक दो में मेरे भाइयों के रूप में वर्णित किया है, मेरे भाइयों के रूप में सारी खुशियाँ गिनाई हैं, और श्लोक दो से चार तक विभिन्न परीक्षणों को पूरा करने वाले व्यक्तियों के रूप में वर्णित किया है।

तो, यहां मुद्दा यह है कि वह विशेष रूप से ईसाइयों का जिक्र कर रहे होंगे। यहाँ, यदि तुम ईसाइयों, भाइयों में से किसी में बुद्धि की कमी है। यह श्लोक दो से चार के विषय के विस्तार का भी संकेत दे सकता है, जहां वह बात करता है, जहां वह आपमें से उन लोगों के बारे में बात करता है जो परीक्षणों का सामना करते हैं।

इसलिए, हालाँकि श्लोक पाँच से आठ एक स्तर पर कुछ मायनों में संबंधित हो सकते हैं, विशेष रूप से उन लोगों के लिए जो परीक्षणों का सामना करते हैं, ज्ञान की कमी का यह व्यवसाय शायद उन लोगों तक ही सीमित नहीं है जो परीक्षणों का सामना करते हैं। फिर यहाँ व्यक्ति की स्थिति को बुद्धिहीन बताया गया है। यहाँ अभाव का सन्दर्भ इस कथन को श्लोक चार से जोड़ता है।

यह एक प्रासंगिक अवलोकन है। श्लोक चार पर ध्यान दें, और दृढ़ता को अपना पूरा प्रभाव होने दें ताकि आप परिपूर्ण और पूर्ण हो जाएं, और यदि आप में से किसी को बुद्धि की कमी है, तो किसी चीज की कमी न हो। तो, वास्तव में आपके पास यहां कुछ भी नहीं होने बनाम ज्ञान की कमी के बीच एक प्रकार का विरोधाभास है, कि आपके पास कुछ भी नहीं हो सकता है, लेकिन यदि आप में से किसी के पास ज्ञान की कमी है।

इसके अलावा, एक विशिष्टीकरण, जिसमें किसी चीज़ की कमी नहीं है, व्यापक, और अब वह एक विशिष्ट चीज़ की कमी के बारे में बात करता है यदि आप में से किसी के पास ज्ञान की कमी है। अब, इस कमी का उद्देश्य, निश्चित रूप से, ज्ञान है, जो छंद 16 से 27 में धोखा देने वाली भाषा की पुनरावृत्ति से संबंधित हो सकता है जिसे हमने खंड सर्वेक्षण में देखा, विशेष रूप से, यह छंद 18, 22 में प्रकट होता है, और 26. तो फिर, हम ज्ञान और धोखे के बीच विरोधाभास पा सकते हैं।

और, निःसंदेह, यह पद 19 के विपरीत भी हो सकता है, मेरे प्यारे भाइयों, इसे जानो। अब, श्लोक पाँच से आठ में पहला उपदेश, निश्चित रूप से, उसे ईश्वर से माँगने देना है, जो कि प्रमाणित है, जो सभी मनुष्यों को उदारतापूर्वक और बिना किसी निंदा के देता है, और उसे दिया जाएगा। हम ध्यान दें कि उपदेश में दो जोर हैं।

सबसे पहले, अनुरोध है, और दूसरी बात, उस व्यक्ति ने अपील की है। ये तार्किक अवलोकन हैं। यहां आपके पास दो मुद्दे हैं, अनुरोध और वह व्यक्ति जिससे अपील की गई है।

अनुरोध के संबंध में, उसे पूछने दो। यह, वास्तव में, प्राप्त करने के साधनों, माँगने के बनाम प्राप्त करने के अन्य साधनों और माँगने के तरीके की ओर इशारा करता है, जो वास्तव में यहां शब्द के विभक्ति द्वारा सुझाया गया है, विशेष रूप से ग्रीक में, जो एक वर्तमान काल है, उसे पूछने दें, अर्थात् वर्तमान काल, संभवतः प्रगतिशील वर्तमान, उसे पूछते रहने दो, पूछते रहने दो। और फिर, जिस व्यक्ति से अपील की गई वह भगवान है।

उसे अन्य संभावित मदद के बजाय ईश्वर से प्रार्थना करने दें। अब, यहाँ औचित्य वास्तव में दोहरा है, जिसमें ईश्वर की गतिविधि और ईश्वर से प्रार्थना का परिणाम दोनों शामिल हैं। आप इन अवलोकनों को तार्किक अवलोकन के रूप में पहचानते हैं।

बेशक, पुष्टिकरण एक संरचनात्मक अवलोकन है, लेकिन हम संकेत दे रहे हैं कि पुष्टिकरण के दोहरे चरित्र में दो मुद्दे शामिल हैं : भगवान की गतिविधि और भगवान से प्रार्थना का परिणाम। भगवान की गतिविधि के संबंध में, आप ध्यान दें कि वह यहां सामान्य से विशेष की ओर बढ़ता है। उनका कहना है कि देना उनकी विशेषता है।

अब, प्रासंगिक संबंध के संदर्भ में, इसे बाद में श्लोक 17 में उठाया जाएगा, जब वह कहता है कि ईश्वर सभी और केवल अच्छे उपहार देता है। यहाँ, वह श्लोक 5 में कहते हैं, जो सभी मनुष्यों को उदारतापूर्वक और बिना किसी निंदा के देता है। श्लोक 17 में, वह कहते हैं, हर अच्छी बंदोबस्ती और हर उत्तम उपहार ऊपर से है, रोशनी के पिता से आता है, जिसके साथ परिवर्तन के कारण कोई भिन्नता या छाया नहीं होती है।

जैसा कि मैं श्लोक 17 में कहता हूँ, वह कहेगा कि वह सभी और केवल अच्छे उपहार देता है, विशेष रूप से शब्द का अच्छा उपहार, जो अन्य सभी आध्यात्मिक अच्छे उपहारों को संभव बनाता है, जो ज्ञान और शब्द के बीच संबंध का मुद्दा उठाता है। दूसरे शब्दों में, अध्याय 1 में, दो चीज़ें हैं जिन्हें ईश्वर देने वाला कहा गया है, बुद्धि और वचन। वैसे, यह हमारे उस संदेह को पुष्ट करता है जो हमने इस खंड के सर्वेक्षण में बताया था, कि बुद्धि एक दैवीय उपहार है, जो जेम्स 1 के पहले भाग में मांगों को पूरा करने का एक साधन है, और शब्द एक दैवीय उपहार है, जो जेम्स 1 के दूसरे भाग में मांगों को पूरा करने का एक साधन है। अब, हम यहां यह भी ध्यान देते हैं कि वह तब विशेष की ओर बढ़ता है।

वह कहते हैं कि कौन देता है और फिर ईश्वर के देने का विशेष विवरण, और इसमें वास्तविक दायरा शामिल है। सबसे पहले सबको कौन देता है? वह कहते हैं, कौन सबको देता है, और यहां

हम किसी के समावेशी दायरे से संबंध पर ध्यान देते हैं। यदि किसी के पास बुद्धि की कमी है, तो उसे परमेश्वर से माँगना चाहिए जो सभी मनुष्यों को उदारता से देता है।

इसलिए, भगवान के देने के संबंध में कोई बहिष्कार नहीं है। और देने का तरीका सकारात्मक और नकारात्मक दोनों तरह से बताया गया है। फिर, ये तार्किक अवलोकन हैं।

सकारात्मक रूप से, वह सभी को उदारतापूर्वक देता है। अब, यहां शब्द हैप्लोस है, और आरएसवी इसका उदारतापूर्वक अनुवाद करता है, और जहां तक इसका मतलब उदारता हो सकता है, यह कठोरता के विपरीत खड़ा है। कहने का तात्पर्य यह है कि, वह देने में फिजूलखर्ची करता है, देने में उदार है, और देने में बिल्कुल भी कंजूसी नहीं करता या पीछे नहीं हटता।

यह उसके देने की सीमा से संबंधित हो सकता है। यह उसके देने के रवैये से संबंधित हो सकता है। और संयोग से, इसे श्लोक 16 से 18 तक फिर से उठाया गया है, यह उसके देने की सीमा का मामला है।

हर अच्छी बंदोबस्ती और हर उत्तम उपहार ऊपर से है, रोशनी के पिता से आ रहा है, जिसके साथ परिवर्तन के कारण कोई भिन्नता या छाया नहीं है। वैसे, श्लोक 17 में ध्यान दें कि उस परिच्छेद में ईश्वर के देने में, फिर से, सीमा और दृष्टिकोण दोनों शामिल हैं। हर अच्छी बंदोबस्ती और हर उत्तम उपहार ऊपर से है, रोशनी के पिता से आ रहा है, वह सीमा है, और फिर दृष्टिकोण, जिसके साथ उसकी अपनी इच्छा के परिवर्तन के कारण कोई भिन्नता या छाया नहीं है।

फिर, दृष्टिकोण, देने के प्रति उनकी प्रतिबद्धता, अपनी इच्छा से उन्होंने हमें सत्य के शब्द के द्वारा सामने लाया। अब, हम यहां भी ध्यान देते हैं, हालांकि, उदारतापूर्वक सकारात्मक और निंदा किए बिना नकारात्मक के बीच एक विरोधाभास है, निंदा करने वालों के खिलाफ, और वह यहां श्लोक 9 से 11 में अमीर को ध्यान में रख सकता है। इसलिए, वह हो सकता है यहां भगवान और धनवान के बीच विरोधाभास का परिचय दिया गया है।

भगवान और अमीर दोनों में देने की क्षमता है, लेकिन भगवान उदारता से देते हैं, जबकि कम से कम अमीर के साथ उनका एक अंतर्निहित विरोधाभास हो सकता है। इसके अलावा, हम ध्यान दें कि दिए गए उपहार के संदर्भ में यहां कोई वस्तु की पहचान नहीं की गई है। यह स्पष्ट नहीं है कि लेखक यहाँ आम तौर पर ईश्वर द्वारा दिए गए ज्ञान के बारे में बात कर रहा है या विशेष रूप से उसके ज्ञान देने के बारे में।

संदर्भ में, दूसरे शब्दों में, आप सोच सकते हैं कि जब वह कहता है, जो सभी लोगों को उदारतापूर्वक और बिना किसी उलाहना के ज्ञान देता है, तो उसका मतलब है कि जो सभी लोगों को उदारतापूर्वक और बिना किसी उलाहना के ज्ञान देता है, लेकिन वह वास्तव में इसे स्पष्ट रूप से इस तरह से योग्य नहीं बनाता है। हो सकता है कि वह सभी मनुष्यों को उदारतापूर्वक और बिना किसी उलाहना के सब कुछ देने की बात कर रहा हो। अब, निःसंदेह, यह उपदेश न केवल ईश्वर के देने के वर्णन के संदर्भ में प्रमाणित है, जैसा कि हमने उल्लेख किया है, बल्कि ईश्वर से मांगने के परिणाम के संदर्भ में भी, और परिणाम प्राप्त करने का आश्वासन है।

यह उसे दिया जाएगा, जो वास्तव में, निश्चित रूप से, यही परिणाम है, इसका कारण है। पूछने का परिणाम प्राप्त करना है, लेकिन आपके पास यह भी है कि आपके पास एक ऐतिहासिक कारण है, लेकिन आपके पास एक प्रकार की वक्तृत्वपूर्ण पुष्टि भी है। आपको भगवान से इसलिए पूछना चाहिए क्योंकि परिणाम बहुत अच्छा होगा, इतना सकारात्मक परिणाम होगा।

यह उसे दे दिया जाएगा. अब, वह आगे बढ़ता है, और श्लोक छह से आठ में, यहां एक दूसरे उपदेश के साथ, जिसका संबंध पूछने के तरीके या तरीके से है। अब, दूसरा उपदेश, जैसा कि मैं इस पैराग्राफ में करने के लिए कहता हूं, प्रार्थना का एक तरीका शामिल है, लेकिन उसे बिना किसी संदेह के विश्वास के साथ मांगने दें।

आरएसवी सुझाव देता है कि इस उपदेश और पिछले उपदेश के बीच विरोधाभास का एक तत्व है। श्लोक छह में आरएसवी के पहले शब्द पर ध्यान दें, लेकिन उसे बिना किसी संदेह के विश्वास के साथ पूछने दें। वे डी को समझते हैं, जो ग्रीक में एक बहुत कमजोर संयोजक है, वे डी को प्रतिकूल समझते हैं।

कहने का तात्पर्य यह है कि पद पाँच में जो कहा गया था और अब वह पद छः में जो कहता है, उसके बीच विरोधाभास है, लेकिन उसे विश्वास के साथ पूछने दें। अब, यदि विरोधाभास मौजूद है, तो यह पर्याप्तता के बिंदु पर है। यह एक तार्किक अवलोकन है।

कहने का तात्पर्य यह है कि, यदि परंतु यहां होना चाहिए, यदि जेम्स ने श्लोक पांच में जो कहा है और जो वह श्लोक छह में कहने के लिए आगे बढ़ता है, के बीच कोई विरोधाभास है, तो यह पर्याप्तता के बिंदु पर है। यह उनके कहने की बात होगी कि केवल भगवान से माँगना पर्याप्त नहीं है। उसे ईश्वर से माँगने दो, लेकिन यह मत सोचो कि ईश्वर से माँगना पर्याप्त है।

भगवान से एक खास तरह से माँगना भी जरूरी है। केवल भगवान से माँगना पर्याप्त नहीं है; व्यक्ति को ईश्वर से एक निश्चित तरीके से यानी विश्वास के साथ प्रार्थना करनी चाहिए। यह पूर्ववर्ती से संभावित गलत अनुमान के विपरीत भी खड़ा हो सकता है, अर्थात् जो कुछ भी आवश्यक है वह भगवान से पूछना है।

कि यह सब भगवान से पूछने की बात है, यह सब भगवान की बात है। इसमें हमारी कोई भूमिका नहीं है।

यह सब ईश्वर की प्रवृत्ति पर निर्भर है। यह हमारे दृष्टिकोण पर बिल्कुल भी निर्भर नहीं करता है। उस गलत अनुमान और गलत निष्कर्ष के विपरीत, वह यह कहकर विरोधाभास के माध्यम से इसे सही कर रहा है, नहीं, एक मानवीय दृष्टिकोण और मानवीय रुख भी महत्वपूर्ण है।

अब, इस उपदेश की चिंता आस्था है। लेखक विरोधाभास द्वारा पुनरावृत्ति के माध्यम से इस चिंता पर जोर देता है। वह कहते हैं, सकारात्मक रूप से, उसे विश्वास के साथ और फिर नकारात्मक रूप से, संदेह किए बिना पूछने दें।

विरोधाभास सकारात्मक और नकारात्मक के बीच है, विश्वास में और संदेह न करने में। बेशक, विश्वास में और संदेह न करना वास्तव में एक ही बात है, इसलिए आपके पास उस विचार की पुनरावृत्ति है। वास्तव में, वह बिना किसी संदेह के, विशेष दायरे के बिना, बिना किसी संदेह के, बिना किसी संदेह के, कहने के लिए आगे बढ़ते हैं।

अब, संभवतः विश्वास के साथ प्रार्थना करने का यह उपदेश ईश्वर की दयालु गतिविधि के वर्णन और पद 5 में प्रार्थना के परिणामों के बारे में घोषणाओं का परिणाम, प्रभाव है। दूसरे शब्दों में, ईश्वर कौन है और आश्वासन के कारण हम भगवान से जो मांगते हैं उसे प्राप्त करने के लिए, इसलिए, भगवान से मांगने का उचित तरीका वह है जिसमें भगवान में विश्वास, भगवान पर भरोसा शामिल है। दूसरे शब्दों में, ईश्वर हमारे विश्वास के योग्य है क्योंकि वह कौन है, जो सभी मनुष्यों को उदारतापूर्वक और बिना किसी उलाहना के देता है, और जो उससे माँगता है उसके प्रति वह जो करता है, उसके कारण उसे दिया जाएगा। चूँकि उत्तर देने और देने के लिए ईश्वर पर भरोसा किया जा सकता है, इसलिए, किसी को देने की उसकी भूमिका में उस पर सटीक और विशेष रूप से भरोसा किया जाना चाहिए, ईश्वर में विश्वास जो उदारतापूर्वक और बिना किसी निंदा के देता है।

इसके अलावा, संदेह करने का यह संदर्भ इस गलत धारणा से संबंधित हो सकता है कि श्लोक 12 से 15 में प्रलोभन ईश्वर की ओर से आते हैं, हमेशा यहां संदर्भ के साथ संबंध बनाने की कोशिश की जाती है। क्योंकि श्लोक 12 से 15 में, आपके मन में ईश्वर की अच्छाई के बारे में संदेह है। जब कोई परीक्षा में पड़े, तो यह न कहे, कि परमेश्वर मेरी परीक्षा करता है, क्योंकि बुराई से परमेश्वर की परीक्षा नहीं होती, और वह किसी की परीक्षा नहीं करता।

यह इस धोखे से भी संबंधित हो सकता है कि अच्छे और उत्तम उपहार केवल ईश्वर की ओर से नहीं आते हैं, श्लोक 16 और 17। आप देखते हैं, जैसा कि मैं कहता हूँ, यह यहां संदेह की धारणा से जुड़ सकता है और वास्तव में क्या सुझाव दे सकता है हमारे परिच्छेद में संदेह के संबंध में उनका ध्यान है। कि वहाँ मोड़ने की छाया है, कि वहाँ परमेश्वर के साथ मुड़ने की छाया है, कि वह अपने देने में दुविधा में है, कि वह अच्छाई और बुराई दोनों का सामना करता है।

ईश्वर के संबंध में उस प्रकार की धारणाएं, उस प्रकार के संदेह, हो सकता है कि यहां संदेह के संबंध में उसके मन में यही हो। अब, पुष्टि वास्तव में दोहरी है, जिसमें संदेह करने वाले का चरित्र और संदेह करने का परिणाम दोनों शामिल हैं। वैसे, आप यहां समानता पर ध्यान दें।

पहला उपदेश ईश्वर के चरित्र द्वारा प्रमाणित किया गया था जो सभी मनुष्यों को उदारतापूर्वक और बिना किसी उलाहना के देता है, और ईश्वर से माँगने का परिणाम उसे दिया जाएगा। यहां, संदेह में न पूछने की पुष्टि में संदेह करने वाले का चरित्र और संदेह करने का परिणाम शामिल है। संदेह करने वाले के चरित्र के संबंध में, पहचान के संदर्भ में, वह जो संदेह करता है, और मैं यहां ग्रीक के साथ काम कर रहा हूँ, इसलिए यह वास्तव में वर्तमान कृदंत है, वह जो संदेह कर रहा है।

और फिर, वर्तमान काल संदेह करने की आदत या निरंतरता का सुझाव दे सकता है। लेकिन स्थिति के संदर्भ में भी, और इस व्यक्ति को दो तरह से वर्णित किया जाता है, दोहरे दिमाग वाला,

डिप्सक्सोस, जिसका शाब्दिक अनुवाद दोहरे दिमाग वाला, दोहरे दिमाग वाला हो सकता है, जिसमें आंतरिक संघर्ष का तत्व शामिल हो सकता है। फिर, यह एक तार्किक अवलोकन है।

यहाँ किस प्रकार का मुद्दा सुझाया गया है? व्यक्ति के भीतर आंतरिक संघर्ष, दोहरी सोच, विरोधी शक्तियाँ काम करती हैं और उसके सभी तरीके अस्थिर होते हैं। फिर से ध्यान दें, यह शब्द सभी समावेशी दायरे की ओर इशारा करता है, अपने सभी तरीकों से अस्थिर है, जिसमें वास्तव में श्लोक 6ए के संबंध में एक सामान्यीकरण शामिल है, उसे बिना किसी संदेह के विश्वास के साथ पूछने दें। कहने का तात्पर्य यह है कि, देने के प्रति ईश्वर की प्रतिबद्धता के संबंध में बिना किसी संदेह के।

यहाँ, वह कहते हैं, हालाँकि, ऐसा व्यक्ति न केवल ईश्वर की देने की प्रतिबद्धता के बारे में संदेह के मामले में अस्थिर है, बल्कि अपने सभी तरीकों से भी अस्थिर है। इसलिए, जैसा कि मैं कहता हूँ, इसमें श्लोक 6ए के संबंध में सामान्यीकरण शामिल है, क्योंकि वहाँ संदेह करना प्रार्थना के संदर्भ में वर्णित है, और विशेष रूप से ज्ञान के लिए प्रार्थना, लेकिन यहाँ, संदेह करने वाले व्यक्ति को अपने सभी तरीकों से अस्थिर बताया गया है, न कि केवल संबंधित बुद्धि के लिए प्रार्थना या प्रार्थना करना। अब, अस्थिर का यह संदर्भ श्लोक 3 और 4 में दृढ़ता के विपरीत हो सकता है। हे मेरे भाइयों, जब तुम विभिन्न परीक्षाओं का सामना करो, तो इसे पूरे आनंद की बात समझो, क्योंकि तुम जानते हो कि तुम्हारे विश्वास की परीक्षा से दृढ़ता उत्पन्न होती है, और ऐसा न हो कि दृढ़ता पूरी हो जाए। प्रभाव, कि तुम परिपूर्ण और पूर्ण हो जाओ, और किसी चीज़ की कमी न रहे।

इसके अलावा, श्लोक 12 में धीरज के साथ, धन्य वह व्यक्ति है जो परीक्षण को सहन करता है, जो श्लोक 10 और 11 में अमीरों के निधन और लुप्त होने के साथ निरंतरता में खड़ा हो सकता है। अमीर को अपने अपमान पर घमंड करने दें क्योंकि, फूल की तरह घास से, वह मर जायेगा। इसी प्रकार क्या धनी मनुष्य अपने काम के बीच में ही मिट जाएगा।

अब, ये दोनों स्थितियाँ वास्तव में ईश्वर के विपरीत हैं, जैसा कि पद 5 में प्रस्तुत किया गया है। ईश्वर अपनी उदारता में एक-दिमाग वाला और अटल है, जबकि यह संदेह करने वाला, इसके विपरीत, समुद्र की लहर की तरह है जो संचालित होता है और हवा से उछाला गया है, और वह दोगला है, और वास्तव में वह दोचिला है और अपने सभी तरीकों से अस्थिर है। भगवान एक-दिमाग वाला है, यह व्यक्ति दो-दिमाग वाला है। ईश्वर अपनी उदारता में अटल है, यह व्यक्ति अपने सभी तरीकों से अस्थिर है।

अब, तुलना के संदर्भ में, हालाँकि, यहाँ संदेह करने वाले व्यक्ति और समुद्र की लहर के बीच तुलना है। यह एक स्पष्ट तुलना है। वह कहते हैं, जो व्यक्ति संदेह करता है वह समुद्र की लहर के समान है।

जो व्यक्ति संदेह करता है वह दोहरे दिमाग वाला और अस्थिर होता है, जैसे लहर हवा से चलती और उछलती है, जो शायद एक अप्रत्याशित और बेकाबू ताकत का संकेत देता है। यहाँ विभक्ति निष्क्रिय है, जो दर्शाता है कि इन तरंगों पर कार्रवाई की जाती है और वे अपने से बाहर किसी बल के प्रति प्रतिक्रिया करती हैं, जैसे हवा द्वारा संचालित और उछाली गई लहर। लहर पर कार्रवाई

की जाती है, भले ही इस व्यक्ति पर, तुलना के माध्यम से, उसके बाहर की ताकतों द्वारा कार्रवाई की जा सकती है।

अब, संदेह करने का परिणाम भगवान से कुछ भी प्राप्त नहीं करना है। निःसंदेह, इसमें कार्य-कारण शामिल है। कारण संदेह है, और परिणाम भगवान से कुछ भी प्राप्त नहीं करना है।

क्योंकि जो सन्देह करता है, वह दुचित्ता और अस्थिर है, वायु की लहरों के समान बहता और उछाला जाता है, उस व्यक्ति को यह नहीं सोचना चाहिए कि उसे प्रभु से कुछ मिलेगा। हम ध्यान देते हैं कि यहां पिछली कविता के साथ दोहरा विरोधाभास है, जिसके प्रत्येक आयाम में वास्तव में तनाव शामिल है। इस प्रतिज्ञान के बीच एक विरोधाभास है जो भगवान सभी को उदारतापूर्वक और बिना किसी निंदा के देता है बनाम इस घोषणा के बीच कि कुछ लोगों को भगवान से कुछ भी प्राप्त नहीं होगा।

उन्होंने कहा है, जो सभी को उदारतापूर्वक और बिना डांटे देता है, और अब वह कहते हैं, ओह, इस व्यक्ति के संबंध में, वह नहीं देता है। आस्था और अनुमान के बीच भी विरोधाभास है। श्लोक 6 में इस उपदेश में, वह कहते हैं, उसे विश्वास से माँगने दो।

परन्तु अब वह कहता है, कि सन्देह करनेवाला समुद्र की लहर के समान है, जो हवा से बहती और उछलती है। उस व्यक्ति को यह नहीं सोचना चाहिए कि उसे प्रभु से कुछ मिलेगा। फिर, यहाँ विश्वास और अनुमान के बीच एक तनाव है। प्राप्त करने का विश्वास प्रभु से प्राप्त करने की धारणा के विपरीत है।

अब, विभक्ति में, यहाँ, निश्चित रूप से, एक वर्तमान अनिवार्यता है। फिर, इससे यह संकेत मिल सकता है कि यह ग्रीक में है, जो अनुमान की ओर झुकाव को संबोधित कर सकता है। दूसरे शब्दों में, ईश्वर के प्रति अनुमान का रवैया न रखें, वास्तव में अनुमान के प्रति, जिसके विरुद्ध चेतावनी दी जानी चाहिए।

लेखक ज्ञान की विशिष्टता से लेकर सामान्य, किसी भी चीज़ की ओर बढ़ता है। वह व्यक्ति यह न सोचे कि उसे प्रभु से कुछ मिलेगा। जेम्स ज्ञान प्राप्त करने की बात करते रहे हैं।

वह अब कुछ भी प्राप्त करने की बात करता है। तो, ये कुछ अवलोकन हैं जो किए जा सकते हैं, यहाँ इन तीन, वास्तव में चार छंदों का विस्तृत अवलोकन है। यह रुकने के लिए एक अच्छी जगह है।

जब हम वापस आएं, तो हम विस्तृत अवलोकन के दूसरे विकल्प पर गौर करेंगे, जो एक विस्तृत विश्लेषण है, वास्तव में एक प्रकार का विचार या एक छोटे मार्ग का विचार प्रवाह का पता लगाना है।

यह डॉ. डेविड बोवर आगमनात्मक बाइबिल अध्ययन पर अपने शिक्षण में हैं। यह सत्र 11, खंड सर्वेक्षण, जेम्स 1, और जेम्स 1:5-8 पर विस्तृत अवलोकन है।